आपका जीवन रंगीन...संगीन....!!!

दो मित्र एक बगीचे में बैठे हैं। उस बगीचे में एक पानी के फव्वारे में रंगीन बल्ब लगे हुए हैं, इसलिए उसका पानी रंगीन दिखता है। दूसरे फव्वारे में रंगीन बल्ब नहीं लगे, इसलिए उसका पानी सफेद ही दिखता है। रंगीन बल्ब वाला फव्वारा थोड़ा कमज़ोर था, इसलिए उसका पानी ऊपर तक नहीं उठता था, जबकि सफेद पानी वाले फव्वारे का पानी बहुत ऊँचाई तक उठता था।

एक मित्र के मन में इन दृश्यों को देख विचार आया, और उसने अपने मित्र को कहा : 'यार! इन दोनों फव्वारों को देखकर मेरे मन में एक विचार उत्पन्न हुआ कि मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिए, 'रंगीन या संगीन'? उसके मन में जब ये प्रश्न उत्पन्न हुआ, तो ऐसा हरेक व्यक्ति के जीवन में कभी तो उत्पन्न हुआ ही होगा।'

- ब्र.कु. गंगाधर

'ज़िन्दगी को कैसा रूप देना? मन में एक बहुत सुंदर स्वप्न है। आकर्षण के लुभावने केन्द्र हैं, दूसरी तरफ अनेक कर्त्तव्यों की लम्बी कतार बनी रहती है। यदि मैं कर्त्तव्यों को ही महत्व दूंगा, तो जीवन की रंगीनता दरकिनार हो जाएगी।'

वर्षों पहले की एक फिल्म का एक गीत याद आता है,

फिल्म का नाम था 'हरियाली और रास्ता' इस फिल्म में एक प्रेरणादायी गीत था, जिसका शब्द अभी भी कानों में गूंज रहा है। 'जीवन के दो पहलू हैं - हरियाली और रास्ता'। जीवन का हम एक ही दृष्टिकोण से मूल्यांकन करते हैं। कई लोग जीवन को केवल मौज-शौक-मनोरंजन-भोग-विलास की वस्तु ही मानते हैं। परिणामस्वरूप विकास के अनेक अवसर निकट होने के बावजूद भी हम उसके लाभ से वंचित रह जाते हैं। उनका मन केवल 'हरियाली' यानि कि पसंदीदा वस्तु के पीछे दौड़-भाग में ही रहता है, और यूँ ही उसका सारा समय बीत जाता है।

'रास्ता' सामने की ओर है, लेकिन वो सुगम नहीं है, उबड़-खाबड़, टेढ़ा-मेढ़ा, कांटों से भरा हुआ है। ऐसे रास्ते पर चलकर सिद्धि या सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना, यानि कि ज़िन्दगी में मिले हुए रंगीन क्षणों को यूं ही खो देना।

जो जीवन को संगीन बनाने की वकालत करते हैं, उनके मुताबिक जीवन में जो कर्त्तव्य के कर्म की उपेक्षा कर केवल रंगीन क्षणों के ही उपासक बनेंगे तो जीवन में बहुत कुछ गंवा देने की बारी आएगी। इसलिए जीवन को संगीन बनाने के लिए जो कुछ भी छोड़ना पड़े, त्याग करना पड़े, वे छोड़कर भी जीवन को संगीन, मज़बूत बनाना चाहिए।

जीवन को उन्नत बनाने के लिए 'रंगीन और संगीन' दोनों की अतिश्योक्ति से मुक्त बनना चाहिए। जैसे कि 'रूप और बसंत', 'रमणीकता और गम्भीरता' का संतुलन हो। केवल रंगीनता से भरे जीवन का अंत फीका और कमज़ोर बना देगा। उसी तरह जीवन में आनंद की उपेक्षा कर कार्यों में डूबे रहकर जीवन के साथ अन्याय करना, ये निरसता को आमंत्रण देना है। इसलिए हकीकत में जीवन में 'रंगीनता और संगीनता' दोनों का समन्वय करना, यही ज़िन्दगी की सच्ची रीत है। मधुरता की भी एक आकर्षक मर्यादा होती है, और कठोरता की भी एक सीमा होती है। अति मधुरता भयानक है, मनुष्य को अपने मन का मिजाज बदलने की ज़रूरत है।

यहाँ एक प्रसंग का उल्लेख करना उचित होगा कि... एक दिन धनवान पिता अपने पुत्र को गांव दिखाने ले गया, गरीबी किसको कहते हैं, ये अपने पुत्र को दिखाने के इरादे से।

गांव के एक अत्यंत गरीब परिवार के खेत में उसने एक दिन गुज़ारा। प्रवास से वापिस आने के बाद पिता ने पुत्र से पूछा: 'बेटा! प्रवास कैसा रहा?'

'बहुत अच्छा पापा' - बेटे ने जवाब दिया।

'आपने देखा ना कि लोग कितने गरीब हैं!' - पिता ने कहा।

'हाँ, पापा!' - पुत्र ने जवाब दिया। 'तो ये सब देखकर तुमने क्या सीखा?' - पिता ने पूछा।

बेटे ने कहा: 'मैंने देखा कि अपने घर में तो एक ही कुत्ता है, और उनके पास चार। अपना स्वीमिंग पूल सौ मिटर लम्बा है, जबकि उनके झरनों का कोई अंत ही नहीं! अपने बगीचे में पचास इम्पोर्टेड बल्ब हैं, जबकि उनके पास तो अनगिनत चमकते सितारे हैं। अपनी छत आगे के आंगन तक ही पहुँचती है, जबकि उनके पास तो समस्त क्षितिज है!'

- शेष पेज 6 पर...

लाइट का क्राउन पहनना है तो मंसा में भी साधारण संकल्प न हों

वण्डरफुल बाबा, वण्डरफुल ड्रामा, बाबा कहते हैं वण्डरफुल मेरे बच्चे, क्योंकि अभी यह नहीं कहते पुरुषार्थ करेंगे, यह होगा, देखा जायेगा... यह भाषा नहीं है। जो करना है अब कर ले। क्या करना है? पूछने की बात नहीं है। कैसे करना है, यह भाषा नहीं है। बाबा प्रैक्टिकली कहता है, ऐसे मिसाल बनो जो तुमको देख औरों को पुरुषार्थ करना सहज लगे। जैसे बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं।

मैं एक सेकेण्ड एक मिनट रुकती हूँ, हरेक अपने आपको देखे, समझे प्रैक्टिकली नैचुरल ऐसा करे जो यह नहीं कि मैं करता हूँ! बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं। समय करा रहा है, यह समय ऐसा है। भावना करा रही है।

जैसा सोचते हैं सूक्ष्म ऐसा भोगते हैं, इसलिए सोचूं क्या? करे कराये आपेही आप, मानुष के नाही कुछ हाथ। अगर मैं अपने आपको मनुष्य समझूंगी तो कुछ नहीं कर सकूंगी, पर ब्रह्मा मुख वंशावली बच्चा हूँ तो कर लेंगे। अभी भी मैं बच्चा हूँ ना, स्टूडेंट हूँ, जैसा बाबा बना रहा है ऐसा सैम्पल बनी हूँ! हमारे स्वप्नों में संकल्पों में कमाई है। पढ़ाई में कमाई बहुत है। पढ़ाई के बाद कमाई नहीं है, जितना पढ़ाई उतनी कमाई। ऐसे नहीं मैं कमाई को अलग टाइम दूंगी, नहीं। पढ़ाई में ही कमाई हो रही है, औरों को भी आप समान बनाने के लिए मेहनत नहीं है। सिर्फ भावना है, वह भावना पहुँचती है। फौरन फीलिंग आती है। अभी मुझे अभोक्ता, अकर्ता होकर रहना है। करना है तो अब करना है। क्या करना है? मुखड़ा देख ले प्राणी अपने दर्पण में। दर्पण को साफ करना। बहुत साल पहले किसी ने मेरे से पूछा कि मेडिटेशन में तुम क्या करती हो? मैंने कहा दर्पण को साफ करती हूँ, खुशी होती है। योग में बैठे इधर देखना, उधर देखना वेस्ट ऑफ टाइम। यह आँखें किसलिए हैं? ऐसे ऐसे यहाँ वहाँ देखने के लिए? अपने को, बाबा को फिर औरों को देखने के लिए यह आँखें हैं। पहले अपने को देखना माना तीसरा नेत्र खुलना। त्रिनेत्री के बाद त्रिकालदर्शी फिर तीनों लोकों की मालिक हूँ ना।

आज बाबा ने कहा खुशी से मरना सिखा रहा हूँ, क्योंकि सतयुग में तो शरीर ऐसे छोड़ेंगे, पुराना हुआ है अभी नया लेना है बस, वो अभ्यास अभी करना है। वह तभी होगा जब अभोक्ता, असोचता फिर अकर्ता बनेंगे। मैंने कुछ नहीं किया, फरिश्तों के दोनों हाथ ऐसे हैं। पूर्वजों का एक हाथ ऐसे है दाता। सतयुग में भले रत्न जड़ित ताज होगा, वो भी

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

दिन-रात सोते खाते पीते ताज पड़ा हुआ है यानि लाइट लाइट लाइट...। तो क्या पुरुषार्थ करें जो यह फीलिंग रहे, लाइट का क्राउन हमेशा पड़ा रहे! फीलिंग यहाँ है, क्राउन यहाँ है। सच्ची दिल यहाँ है, कोई भी मन्सा संकल्प थोड़ा भी साधारण है तो क्राउन नहीं होगा, इसलिए शान्त, शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प से अनेक कार्य अपने आप हो रहे हैं। सिर्फ संकल्प आयेगा यह होना चाहिए। अच्छा हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है, बाबा बैठा है। सारे कल्प में ऐसा बाबा फिर नहीं मिलेगा। सारे विश्व में ऐसा बाबा नहीं है, शिवबाबा तो नहीं मिलेगा पर ब्रह्माबाबा भी नहीं मिलेगा। ब्रह्माबाबा के द्वारा हर मुरली में बाबा समझाता है, पर बुद्धि शुद्ध हो तो समझ आती है। अभी दुनिया देख रही है, हमारे दु:ख हर्ता, शान्ति दाता कब हाज़िर होते हैं, कहाँ हाज़िर होते हैं? तो मेरी मनोवृत्ति ऐसी हो जो मुझे देख बाबा को देखें। बाबा ने दिव्य बुद्धि, दिव्य दृष्टि दी है। बाबा कहते है प्रकृति भी तुम्हारे गले में सम्पूर्ण बनने का हार पहनाने के लिए बैठी हुई है।

स्वयं, बाप और परिवार से संतुष्टता का सर्टीफिकेट लो

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें सम्मान दिया है - तुम संतुष्ट मणियाँ हो। जो संतुष्ट होगा वो मणि के मुआफिक चमकेगा ज़रूर, लाइट माइट रूप होगा, क्योंकि लाइट चमकती है ना। तो बाबा ने कहा है, मैं हरेक बच्चे को देखता हूँ, एक-एक मेरा बच्चा क्या नज़र आता है? संतुष्टमणि, और संतुष्ट मणि की विशेषता क्या है? संतुष्टमणि की विशेषता यह होगी जो वो अपने को भी प्रिय होगी, बाप को भी प्रिय होगी और परिवार को भी प्रिय होगी। तीनों को प्रिय है माना संतुष्टमणि है। कई समझते हैं बाबा मेरे से संतुष्ट है तो सबकुछ हो गया, या मैं बाबा से संतुष्ट हूँ तो सबकुछ हो गया, लेकिन नहीं। बाबा कहते हैं परिवार भी ज़रूरी है, क्यों? क्योंकि हम सिर्फ धर्म स्थापन नहीं कर रहे हैं, धर्म के साथ राज्य भी स्थापन कर रहे हैं। जो भी दूसरे डिवाइन फादर्स आये हैं, वो केवल धर्म स्थापन करते हैं, पीछे राज्य चलता है। लेकिन बाबा हमारा धर्म और राज्य दोनों साथ-साथ स्थापन करते हैं। तो परिवार बहुत आवश्यक है, हम कहें बस मैं हूँ ना, तो राजा बन जायेंगे? किस पर राज्य करेंगे? अपने ऊपर ही राज्य करेंगे क्या? प्रजा तो चाहिए ना, इसलिए बाबा कहते हैं कि यह ब्राह्मण परिवार सारे कल्प में बहुत प्यारा है। परमात्मा बाप ने हम एक-एक को कहाँ से ढूंढ़ के निकाला है। कितने देशों के एक-एक करके आये हैं, इंडिया में देखो कौन-कौन से गांव-गांव से कहाँ कहाँ से आये हैं, निकाला किसने? भगवान को सभी ढूंढ़ रहे हैं, कितना बिचारे प्रयत्न करते हैं कि हे भगवान, हे भगवान। और हमको भगवान ने खुद आके ढूंढ़ लिया, तो है ना भाग्य! तो बाबा कहते हैं ऐसे एक एक ब्राह्मण परिवार की आत्मा बहुत भाग्यवान है और हमारा कितना बड़ा परिवार है। तो परिवार में भी प्यार ज़रूरी है।

तो जो संतुष्टमणि होंगे उनका परिवार से भी प्यार होगा। हमें बाबा से तो प्यार है, तब तो यहाँ पहुँचे हैं या रहते हैं। अपने से भी प्यार होना चाहिए, मैं कौन हूँ? बाबा ने हमको कितने स्वमान दिये हैं, इसलिए अपने आपसे भी प्यार होना चाहिए। मैं भगवान का बच्चा हूँ, कम थोड़ेही हूँ। कभी कुछ साधारण हो जाता है तो अंदर से आना चाहिए कि मैं कौन और मेरा बाबा कौन? हमारे परिवार का मर्तबा क्या है?

सारे कल्प में इतना बड़ा परिवार होता ही नहीं है, हो ही नहीं सकता, क्योंकि यह तो मुख का परिवार है। परिवार में आप एक एक की विशेषता देखो। बाबा ने हरेक को कोई-न-कोई विशेषता दी ज़रूर है, लेकिन उस विशेषता को हम कार्य में लगायें या नहीं लगायें, वो हमारे ऊपर है।

तो संतुष्टमणि वही बन सकता है, संतुष्ट वही रह सकता है जिसको सर्व प्राप्तियाँ हों। अगर कोई भी अप्राप्ति होगी तो संतुष्टी नहीं। कितनी भी कोशिश करेगा, लेकिन अगर कोई भी संतुष्टता में कमी है तो सदा खुश नहीं रहेगा। भगवान किसका है वो हमारा बाप है, सबकुछ है। तो हमारे चेहरे पर कितनी खुशी होनी चाहिए! क्योंकि हमारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं। जब भगवान बाप भी हो, शिक्षक भी हो, सतगुरू भी हो। अभी दु:ख बढ़ रहा है, यह तो सभी जानते हैं। बाबा कहता था अचानक दु:ख के पहाड़ गिरेंगे। हम लोग सोचते हैं आयेंगे तो देख लेंगे। एक कहानी है भट्ठी में चारो ओर आग लगी थी फिर भी बिल्ली के जो पूंगरे थे, वो सेफ रहे। तो बाबा कहते हैं आप बच्चे सदा सेफ हो, सेफ रहेंगे, लेकिन आप रहमदिल दाता बन करके इन दु:खियों को शान्ति की, शक्ति की, खुशी की किरणें दो। ऐसी सेवा करो और सदा स्वयं से, बाप से और परिवार से संतुष्टता का सटीफिकेट भी लो। तो हरेक अपने से पूछे कि यह तीनों ही बातें अपने साथ हैं? बाबा कहते हैं संस्कार मिलन की रास करो। जो पुराने संस्कार बहुत जन्मों के ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ के हैं वो सुखी बनने नहीं देते। जैसे हाथ में हाथ मिलाके डांस करते हैं, ऐसे संस्कार मिलन की रास माना एक दो में संस्कार मिल जायें। संस्कार नहीं मिलते हैं तो चारो सबजेक्ट में से कुछ ज्ञान की प्राप्ति में फर्क है, धारणा में फर्क है। हमें चारो सबजेक्ट में परफेक्ट होना है। ऐसे नहीं ज्ञान तो मेरे को है, घण्टा भी सुना सकती हूँ, कैसी भी टॉपिक पर बोल सकती हूँ वो तो ठीक है, है तो अच्छा है, लेकिन चार ही सबजेक्ट मेरे में हैं? अगर चारो ही सबजेक्ट हैं तो मेरा संस्कार मिलन ज़रूर होगा।

तो संस्कार मिलन की डेट बाबा को बताना। अगर सभी विघ्न विनाश हो गये तो हम अपने घर चलेंगे फिर अपने राज्य में आयेंगे।